2 सामाजिक परिवर्तन के जैविकीय कारक

[BIOLOGICAL FACTORS OF SOCIAL CHANGE]

सामाजिक परिवर्तन क्यों और किस प्रकार होता है ? इसे स्पष्ट करने के लिए बहुत प्राचीन काल से विभिन्न लेखक एक-दूसरे से भिन्न विचार प्रस्तुत करते रहे हैं। सबसे आरम्भिक विद्वानों का विचार था कि सामाजिक परिवर्तन का सर्वप्रमुख कारक प्राकृतिक दशाओं में परिवर्तन होना है। इसी के आधार पर एक पृथक् भौगोलिक सम्प्रदाय का विकास हुआ। इससे सम्बन्धित विचारक यह प्रमाणित करने का प्रयत्न करते रहे कि जलवायु, ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों के अनुसार ही मानवीय व्यवहारों तथा सामाजिक संस्थाओं का निर्धारण होता है। जब कभी भी प्राकृतिक दशाओं में परिवर्तन होता है तो मानवीय व्यवहारों और सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन आरम्भ हो जाने के कारण सामाजिक परिवर्तन की दशा उत्पन्न होती है। कुछ विद्वानों ने जब यह महसूस किया कि प्राकृतिक दशाओं में कोई परिवर्तन न होने के बाद भी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है, तब उन्होंने कुछ जैविकीय आधारों पर सामाजिक परिवर्तन की विवेचना करना आरम्भ कर दिया। वास्तव में, जैविकीय दशाएँ भी प्राकृतिक दशाओं का ही एक अंग है क्योंकि या तो इन पर मनुष्य का नियन्त्रण बहुत कम होता है अथवा यह मनुष्य के नियन्त्रण से स्वतन्त्र रहकर मानव जीवन को प्रभावित करती रहती हैं। जीववादी यह मानते हैं कि जिस तरह वनस्पतियों और पशुओं का जीवन प्रकृति के नियमों के अनुसार स्वयं संचालित होता रहता है, उसी तरह मानवीय व्यवहारों तथा इन व्यवहारों को प्रभावित करने वाले नियमों पर भी जैविकीय कारकों का एक प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। यह सच है कि आज सामाजिक परिवर्तन की विवेचना में जैविकीय कारकों के प्रभाव को अधिक महत्व नहीं दिया जाता लेकिन अनेक विद्वान् यह मानते हैं कि वर्तमान युग में भी समाज की संरचना तथा मानवीय अन्तर्क्रियाओं को जैविकीय दशाएँ कुछ सीमा तक अवश्य प्रभावित करती हैं। उनके अनुसार जैविकीय कारक सामाजिक परिवर्तन का एक अप्रत्यक्ष आधार है। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि सामाजिक परिवर्तन के अन्य कारकों को समझने से पहले जैविकीय कारकों तथा सामाजिक परिवर्तन में इनके योगदान पर विचार कर लिया जाय।

जैविकीय कारक का अर्थ (Meaning of Biological Factor)

सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि जैविकीय कारकों का तात्पर्य उन दशाओं से है जो मानव की जीव-रचना से सम्बन्धित गुणों को प्रभावित करती हैं अथवा जैविक प्रक्रियाओं के रूप में स्पष्ट होकर सामाजिक जीवन में परिवर्तन उत्पन्न करती हैं। इस दृष्टिकोण से वंशानुक्रम की प्रक्रिया, समाज में व्यक्तियों के स्वास्थ्य का स्तर, अनुकूलन की प्रक्रिया, जन्म-दर तथा मृत्यु-दर एवं जनसंख्या का आकार आदि वे प्रमुख दशाएँ हैं जिन्हें जैविकीय कारकों के रूप में स्पष्ट किया जाता है। जीववादियों का कथन है कि **जैविकीय कारक मनुष्य की अस्तित्व सम्बन्धी क्षमताओं के रूप में स्पष्ट होते हैं।** स्वाभाविक है कि मनुष्य की अस्तित्व सम्बन्धी क्षमताओं में होने वाला कोई भी परिवर्तन मानवीय व्यवहारों को प्रभावित करके सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक अथवा बाधक होता है। सामाजिक परिवर्तन के एक प्रमुख कारक के रूप में जैविकीय कारकों के प्रभाव का उल्लेख करने में **चार्ल्स डार्विन** (C. Darwin) का योगदान बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। 19वीं शताब्दी में डार्विन ने यह स्पष्ट किया कि प्राकृतिक प्रवरण (Natural Selection) की प्रक्रिया जैविकीय उद्विकास का सबसे प्रमुख आधार है। बाद में जैविकीय उद्विकास के आधार पर ही सामाजिक उद्विकास (Social Evolution) की अवधारणा को विकसित करके इसे सामाजिक परिवर्तन के एक प्रमुख कारण के रूप में स्पष्ट किया जाने लगा। इस प्रकार यह

Scanned with CamScanner

कहा जा सकता है कि जो जैविकीय विशेषताएँ आगे आने वाली पीढ़ियों के वंशानुगत गुणों तथा जनसंख्यात्मक क्षमताओं का निर्धारण करती हैं, उन्हीं विशेषताओं को हम जैविकीय कारक कहते हैं।

जैविकीय कारकों का सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्ध
(RELATION OF BIOLOGICAL FACTORS WITH SOCIAL CHANGE)

यह सच है कि मनुष्य की जैविकीय विशेषताएँ एक बड़ी सीमा तक सामाजिक दशाओं से प्रभावित होती हैं लेकिन मनुष्य की विभिन्न क्षमताओं तथा आवश्यकताओं को प्रभावित करने में जैविकीय कारकों के प्रभाव की अवहेलना नहीं की जा सकती। कुछ प्रमुख जैविकीय कारकों तथा मानवीय व्यवहारों एवं संस्थाओं पर उनके प्रभाव को स्पष्ट करके इस तथ्य को भली-भाँति समझा जा सकता है।

1. आनुवंशिकता (Heredity)

आनुवंशिकता एक जैविकीय तथ्य है जो 'जनन विद्या' के सिद्धान्तों पर आधारित है। आनुवंशिकता का नियम यह बताता है कि बच्चों में किस प्रकार अपने माता-पिता के विभिन्न गुणों का संचरण होने की सम्भावना रहती है। आनुवंशिकता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए **रूथ बेनेडिक्ट** (Ruth Benedict) ने लिखा है, "आनुवंशिकता का अर्थ माता-पिता से उनकी सन्तानों में विभिन्न गुणों का संचरण होना है।" **जिस्बर्ट** (Gisbert) के शब्दों में, 'प्रकृति में विभिन्न पीढ़ियों का प्रत्येक कार्य माता-पिता से उनके बच्चों में कुछ जैविक और मानसिक गुणों का संचरित होना है जिसे आनुवंशिकता कहा जाता है।" आरम्भ में **मेण्डल** (Mendal) ने मटर के दानों पर किये गये परीक्षण से यह स्पष्ट किया कि विभिन्न पीढ़ियों के प्रजनन कार्य में वाहकणुओं का कभी मिश्रण नहीं होता। उनका मूल रूप एक लम्बी अवधि तक एक-सा बना रहता है। एक सामान्य उदाहरण के द्वारा मेण्डल के कथन को सरलता से समझा जा सकता है। वंश का प्रभाव जानने के लिए यदि हम एक लाल और एक सफेद गुलाब की कलम को मिलाकर उससे नया पौधा विकसित करें तो इसमें आने वाले फूलों का रंग लाल और सफेद का मिश्रण अर्थात् गुलाबी होगा। यदि हम गुलाबी फूल देने वाले पौधे की विभिन्न शाखाओं से अलग-अलग पौधे तैयार करें तो किसी पौधे में आने वाले फूल लाल होंगे, किसी में गुलाबी और कुछ में सफेद। इसके बाद यदि लाल और सफेद पौधों की शाखाओं से फिर अलग-अलग पौधे तैयार किये जायें तो लाल पौधे की शाखा से केवल लाल फूल खिलेंगे, जबकि सफेद फूल वाली शाखा के पौधे से केवल सफेद फूल आयेंगे। इस आधार पर जीववादियों ने यह निष्कर्ष दिया कि बच्चे को अपने माता-पिता से जो वाहकणु अथवा जीनी (Genes) प्राप्त होते हैं, उनके मूल रूप में एक लम्बे समय तक कोई परिवर्तन नहीं होता तथा इन्हीं वाहकणुओं के द्वारा बच्चे की सभी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का निर्धारण होता है।

विभिन्न अध्ययनों के आधार पर अनेक विद्वान यह मानते रहे कि जनसंख्या के विभिन्न गुणों, जैसे—लोगों की शारीरिक क्षमता, बौद्धिक योग्यता तथा शारीरिक लक्षणों को प्रभावित करने में पर्यावरण की तुलना में आनुवंशिकता का प्रभाव कई गुना अधिक होता है। जीववादियों ने यह भी निष्कर्ष दिया कि वाहकणुओं के संयोग में होने वाला परिवर्तन, जलवायु सम्बन्धी परिवर्तन तथा प्रजातीय मिश्रण आदि ऐसी दशाएँ हैं जिनके फलस्वरूप आनुवंशिक विशेषताएँ बदलने लगती हैं। जब विभिन्न समूहों की शारीरिक और मानसिक विशेषताओं में परिवर्तन होता है, तब व्यवहार के नये ढंगों को प्रोत्साहन मिलने से सामाजिक परिवर्तन की दशा उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन की विवेचना में आनुवंशिक दशाओं का एक विशेष योगदान है।

2. स्वास्थ्य का स्तर (Level of Health)

अनेक जीववादी यह मानते हैं कि किसी समाज की जनसंख्या के स्वास्थ्य का स्तर एक ऐसा जैविकीय कारक है जिसका सामाजिक परिवर्तन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जिन समाजों में स्वास्थ्य का सामान्य स्तर अच्छा होता है, वहाँ जन्म-दर तथा मृत्यु-दर दोनों कम पायी जाती हैं। यह दशा जनसंख्या के आकार को प्रभावित करके सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य का स्तर, जिसे अधिकांश जीववादी किसी न किसी रूप में आनुवंशिकता से ही सम्बन्धित मानते हैं, लोगों की कार्यक्षमता तथा बौद्धिक स्तर को निर्धारित करता है। इससे समाज में आविष्कारों और नवाचारों में वृद्धि होती है। किसी समाज में जैसे-जैसे आविष्कार और नवाचार बढ़ते जाते हैं, वहाँ सामाजिक परिवर्तन की सम्भावना भी उतनी ही अधिक हो जाती है। स्वास्थ्य के स्तर के रूप में जैविकीय कारकों के प्रभाव

Scanned with CamScanner

को स्पष्ट करने के लिए यह भी प्रमाणित करने का प्रयत्न किया गया कि जिन समाजों में स्वास्थ्य का स्तर बुरा होने के कारण जन्म-दर तथा मृत्यु-दर अधिक होती है, वहाँ सामाजिक नियम परम्परावादी और अक्सर रूढ़िवादी होते हैं। इसके फलस्वरूप सामाजिक संरचना में परिवर्तन की सम्भावना बहुत कम रह जाती है। दूसरी ओर, स्वास्थ्य का स्तर अच्छा होने से प्रतिभाशाली सन्तानों का जन्म होता है, योग्य और प्रतिभाशाली लोग उन नियमों अथवा संस्थाओं को मान्यता नहीं देते जो अनुपयोगी हो गयी हों। इससे भी समाज में परिवर्तन को प्रोत्साहन मिलने लगता है। स्पष्ट है कि स्वास्थ्य का स्तर एक प्रमुख जैविकीय कारक है तथा सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देने अथवा उसमें बाधा उत्पन्न करने में इसका योगदान अवश्य होता है।

3. जन्म-दर तथा मृत्यु-दर (Birth Rate and Death Rate)

जैविकीय कारकों के अन्तर्गत जन्म-दर तथा मृत्यु-दर को सामाजिक परिवर्तन के एक प्रमुख कारक के रूप में देखा जाता है। यह सच है कि चिकित्सा विज्ञान में आज बहुत प्रगति हो जाने के कारण एक ओर जन्म-दर को नियन्त्रित करना सम्भव हो गया है तो दूसरी ओर, चिकित्सा सुविधाएँ बढ़ने से जीवन अवधि में भी वृद्धि हुई है। इसके बाद भी अधिकांश समाजों में जन्म-दर तथा मृत्यु-दर पर मनुष्य का नियन्त्रण बहुत कम होने के कारण इसे एक जैविकीय कारक माना जाता है। जिन समाजों में **जन्म-दर** अधिक होती है, वहाँ जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने लगती है लेकिन उसके अनुपात में आजीविका के साधनों में होने वाली वृद्धि बहुत कम होती है। इसके फलस्वरूप ऐसे समाजों में गरीबी, बेकारी, बीमारी और कार्यक्षमता में कमी जैसी समस्याएँ बढ़ जाती हैं। जैसे-जैसे इन समस्याओं के प्रभाव से लोगों का सामान्य जीवन-स्तर गिरता है, अस्वस्थ बच्चों के जन्म की सम्भावना बढ़ने लगती है तथा सभी लोगों को शिक्षा की सुविधाएँ न मिल पाने से उनका जीवन रूढ़िवादी होने लगता है। यह सभी दशाएँ सामाजिक परिवर्तन को रोकने में सहायक होती हैं। इसके विपरीत, जन्म-दर कम होने से समाज का आकार छोटा रहता है तथा सभी लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आजीविका के अधिक अवसर मिलने से सामाजिक संगठन सुदृढ़ होने लगता है। ऐसे समाजों में परिवर्तन की गति भी अधिक तेज होती है। **मृत्यु-दर** का सम्बन्ध जीवन-अवधि से है। मृत्यु-दर कम होने पर लोगों की जीवन-अवधि में वृद्धि होने से समाज में अनुभवी लोगों की संख्या बढ़ती है। इससे सामाजिक सन्तुलन को बनाये रखना सरल हो जाता है। मृत्यु-दर अधिक होने से नयी पीढ़ियाँ वृद्ध लोगों के अनुभवों का लाभ उठाने से वंचित रह जाती हैं। इसके फलस्वरूप समाज में अक्सर ऐसे मूल्यों और व्यवहारों का प्रभाव बढ़ने लगता है जो अधिक उपयोगी नहीं होते। इस आधार पर भी जीववादी एक जैविकीय कारक के रूप में जन्म तथा मृत्यु-दर को सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक के रूप में देखते हैं।

4. जनसंख्यात्मक विशेषताएँ (Demographic Features)

जीववादियों के अनुसार जनसंख्यात्मक विशेषताओं में स्त्री-पुरुषों का अनुपात तथा आयु-समूह दो ऐसी विशेषताएँ हैं जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध पुनरोत्पादन की प्रक्रिया तथा स्वास्थ्य के जैविकीय नियमों से है। जहाँ तक **स्त्री-पुरुषों के अनुपात** का सम्बन्ध है, यह पूरी तरह एक जैविकीय तथ्य है तथा चिकित्सा विज्ञान की प्रगति के बाद भी इस पर मनुष्य का कोई नियन्त्रण नहीं है। चिकित्सा विज्ञान के पास ऐसा कोई तरीका नहीं है जिसकी सहायता से व्यक्ति अपनी इच्छानुसार लड़के अथवा लड़की को जन्म दे सके। किसी समाज में एक हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या इससे कम होगी या अधिक, इसका निर्धारण पूरी तरह जैविकीय नियमों के अनुसार ही होता है। स्त्री-पुरुषों के अनुपात की भिन्नता के अनुसार ही समाज में विवाह तथा नातेदारी से सम्बन्धित संस्थाओं के रूप में निर्धारण होता है। इसी तरह समाज में किस **आयु-समूह** के स्त्री-पुरुषों की संख्या क्या होगी, इसका निर्धारण करने में भी जैविकीय नियमों की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। तात्पर्य यह है कि जनसंख्यात्मक विशेषताएँ किसी न किसी रूप में सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक हैं। इस कारक की विस्तृत विवेचना हम सामाजिक परिवर्तन के जनांकिकीय कारकों के अन्तर्गत करेंगे।

Scanned with CamScanner